32 तारीखों और लड़ाइयों से परे!

उमाशंकर पेरिओडी



बच्चों के लिए इतिहास पर आधारित दीपा धनराज की एक वीडियो शृंखला, यंग हिस्टोरियन्स, की समीक्षा

आप प्राथमिक स्कूल के बच्चों को इतिहास कैसे पढ़ाएँगे? इतिहास की किसी कक्षा में बच्चों को क्या अनुभव मिलना चाहिए? बच्चों को इतिहास पढ़ाने का क्या महत्व है? इतिहास के शिक्षक को कक्षा में प्रवेश करने से पहले क्या तैयारियाँ करना चाहिए? इतिहास की किसी अच्छी कक्षा के कुछ पहलू क्या हैं? आप इतिहास की कक्षा को रुचिकर और सार्थक कैसे बना सकते हैं? अगर इतिहास तारीखों और राजाओं की लड़ाइयों के बारे में नहीं है, तो फिर इतिहास आखिर है क्या?ये वे प्रश्न हैं जो आमतौर पर हमारे शिक्षकों के सामने रहते हैं। कई लोगों ने इन प्रश्नों के जवाब ढूँढने के प्रयास किए हैं। लोगों ने इन प्रश्नों का जवाब लेखों, पुस्तकों, व्याख्यानों, कार्यशालाओं और चर्चाओं के द्वारा दिया है। दीपा धनराज ने इन प्रश्नों का बहुत ही सार्थक जवाब देने का प्रयास एक ऐसे माध्यम से किया है, जिसमें वे बहुत कुशल हैं – वीडियो फिल्म। उन्होंने **यंग हिस्टोरियन्स** नामक 9 वीडियो फिल्मों की एक शृंखला बनाई है। इसके लिए उन्होंने प्राथमिक स्कूल के छात्रों के एक समूह के साथ विभिन्न स्थानों की यात्रा की, और वहाँ एक रचनाशील शिक्षक की सहायता से उन बच्चों की इतिहास को समझने की प्रक्रिया को कैमरे में कैद किया है।

दीपा की बनाई गई वीडियो शृंखला बहुत अनोखी है। इसमें आधे–आधे घण्टे की 9 फ़िल्में हैं। वैसे हर फ़िल्म को अलग–अलग देखा जा सकता है, लेकिन बेहतर और व्यापक समझ के लिए इन्हें एक साथ भी देखा जा सकता है। मैंने इन फिल्मों को विभिन्न दर्शकों के साथ विभिन्न उद्देश्यों को लेकर कई बार देखा है। फिल्मों की भाँति ये किसी भी सामान्य व्यक्ति को शिक्षित करती हैं और उसका मनोरंजन करती हैं। बच्चों के लिए इन फिल्मों को देखना एक रोमांचकारी अनुभव है, जो आभासी ढंग से ऐतिहासिक महत्व के स्थानों पर ले जाकर उन्हें ढेर सारे आनन्द और चुनौतियों के साथ कुछ इतिहास सिखाता है। शिक्षक और शिक्षक–प्रशिक्षकों के लिए ये फिल्में विषय का ज्ञान तो देती ही हैं, साथ में इतिहास पढ़ाने की शिक्षण–कला भी दर्शाती हैं।

कोटागनहल्ली रमैय्या द्वारा लिखित पटकथा बहुत सरल प्रतीत होती है। 16 बच्चों का एक समूह एक गतिशील और रचनाशील शिक्षक के साथ सक्रियता से भाग लेकर अन्वेषण करते हुए इतिहास का अध्ययन करता है; शिक्षक इस पूरी प्रक्रिया को पेशेवरों, विशेषज्ञों, शोधार्थियों और कलाकारों की मदद से सुगम बनाता है। विषय का चयन, बच्चों की सक्रिय भागीदारी, भव्य स्थान और आवश्यक प्रतिक्रिया हासिल करने के लिए इस्तेमाल किए गए कला के विभिन्न रूप, ये सब इस शृंखला को देखने के अनुभव को सुखद और समृद्ध बनाते हैं।

हमारे परिवार का इतिहास (अवर फैमिली हिस्ट्री) (30:59 मिनट)

शृंखला की शुरुआत इस फिल्म से होती है जिसमें बच्चे अपने स्वयं के परिवार का इतिहास खोजते हैं। प्रारम्भ में, बच्चे लोक इतिहासकार – येलावारू से मिलते हैं, जिन्होंने विभिन्न परिवारों के इतिहासों को रचा और बनाए रखा है। इसमें हमें मौखिक इतिहास रचने और उसे सम्बन्धित परिवारों को गाकर सुनाने की प्रक्रिया की झलक मिलती है। बच्चे अपने परिवार के सदस्यों से मिलते हैं और उनकी मदद से वे अपने परिवार का इतिहास रचते हैं। वे परिवार के बड़े–बूढ़ों से मिली जानकारी के आधार पर वंश वृक्ष बनाते हैं। इस कार्य के लिए दलित समूह के बच्चों का चयन करना अपने–आप में एक शक्तिशाली वक्तव्य बन जाता है। परिवार के सदस्य बताते हैं कि किस तरह पुराने समय में उन्हें ऊँची जातियों के परिवारों का मैला और गन्दा पानी अपने सिर पर ढो कर ले जाना पड़ता था।

> *बच्चों के लिए इन फिल्मों को देखना एक रोमांचकारी अनुभव है, जो आभासी ढंग से ऐतिहासिक महत्व के स्थानों पर उन्हें ले जाकर ढेर सारे आनन्द और चुनौतियों के साथ कुछ इतिहास सिखाता है। शिक्षक और शिक्षक–प्रशिक्षकों के लिए ये फिल्में विषय का ज्ञान तो देती ही हैं, साथ में इतिहास पढ़ाने की शिक्षण–कला भी दर्शाती हैं।*

हमारे गाँव का इतिहास (अवर विलेज हिस्ट्री) (31:30 मिनट)

इस प्रस्तुति में बच्चे अपने गाँव जाकर बुजुर्गों से बात करके गाँव के कुछ प्रमुख पहलुओं – ऊँची जाति के लोगों का कुआँ, एक पुराना मन्दिर और अन्न भण्डार – के बारे में जानकारी इकट्ठा करते हैं। ये बुजुर्ग महाअकाल और 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के बारे में अपने अनुभव सुनाते हैं। वे दूसरे विश्व युद्ध के बाद अनाज की राशन व्यवस्था की शुरुआत के बारे में भी बताते हैं। छात्रों के द्वारा

लोगों से जानकारियाँ इकट्ठी करने और फिर अपने समूह में बातचीत, तर्क, खण्डन और प्रमाणन के द्वारा उन्हें गहराने की प्रक्रिया बहुत दिलचस्प है।

पुरातत्व और मूर्तिकला (आर्कियालॉजी एण्ड स्कल्पचर) (30:40 मिनट)

इसकी शुरुआत में सहायक की भूमिका निभाते शिक्षक बच्चों के सामने कुछ घरेलू चीजें फैला देते हैं और उनसे कहते हैं कि वे उनके आधार पर घरों की प्रकृति, उनमें रहने वाले लोगों की संख्या, उनके व्यवसाय, उनकी खाने की आदतों आदि के बारे में सोचकर व्याख्या करें। इसके बाद छात्रों में बहुत ही जोशीली चर्चा शुरू हो जाती है। चर्चा, चुनौती से जूझने, और अनुमान लगाने के द्वारा वे उपलब्ध सबूतों की सहायता से कुछ निष्कर्षों पर पहुँचते हैं। बाद में एक विशेषज्ञ उत्तर पश्चिम कर्नाटक में एक स्थान से निकाले गए पत्थर के औजारों की मदद से बच्चों को हजारों वर्ष पूर्व रहने वाले लोगों के जीवन के बारे में समझाते हैं। अन्तिम हिस्से में, बच्चे ऐहोल जाते हैं और वहाँ मूर्तियों के माध्यम से इतिहास सीखते हैं।

शिलालेखों के माध्यम से इतिहास का अध्ययन (लर्निंग हिस्ट्री थ्रू इंस्क्रिप्शन्स) (29:42 मिनट)

बच्चे बदामी और पट्टडाकल्लु जाकर मन्दिरों और भग्न स्मारकों में प्राप्त शिलालेखों के माध्यम से इतिहास को खोजते हैं। एक विशेषज्ञ उन्हें कागज पर शिलालेख की नकल करके उसे पढ़ने की प्रक्रिया समझाता है। अन्त में शिक्षक मन्दिरों की बहुआयामी भूमिका के बारे में विस्तार से समझाते हैं। वे बताते हैं कि किस तरह ये मन्दिर पूजा, मनोरंजन, व्यापार, कारोबार, न्याय और शिक्षा के केन्द्र थे।

समुद्री मार्ग (सी रूटस) (29:59 मिनट)

इस फिल्म में बच्चे समुद्री रास्तों के बारे में जानकारी लेने तटीय कर्नाटक में जाते हैं। एक स्थानीय शिक्षक ग्लोब की सहायता से पुराने समय में व्यापारियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले रास्तों को ढूँढ निकालने में और फिर उन्हें नक्शे पर अंकित करने में बच्चों की मदद करते हैं। फिर वे एक नौका में यात्रा करते हैं और नाविक से गहरे समुद्र में रास्ते ढूँढने की प्रक्रिया पता करते हैं। अन्त में वे एक जहाज बनाने वाले यार्ड में जाते हैं और वहाँ काम करने वालों से बात कर जहाज बनाने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी लेते हैं।

व्यापार और इतिहास (ट्रेड एण्ड हिस्ट्री) (31:16 मिनट)

इस क्षेत्र के एक स्थानीय विशेषज्ञ भारत के एक प्राचीन बन्दरगाह बसरूर में उस समय जोर–शोर से होने वाले व्यापार के बारे में समझने में बच्चों की मदद करते हैं। बच्चे उनकी सहायता से किसी भी बन्दरगाह के उत्थान और पतन के लिए जिम्मेदार विभिन्न प्राकृतिक और मानवनिर्मित परिस्थितियों के बारे में समझते हैं। वे स्थानीय जैन बसादी का भ्रमण करते हैं और प्रतिमाओं के माध्यम से पता लगाने की कोशिश करते हैं कि उनके दूसरे देशों, जैसे चीन, अफ्रीका और मध्य पूर्व, के साथ कैसे सम्पर्क और सम्बन्ध रहे हो सकते हैं। मूडाबिद्री के जैन बसादी में एक चीनी ड्रैगन और अफ्रीकी जिराफ की नक्काशी देख कर बच्चे बहुत उत्साहित होते हैं। सिक्के जमा करने वाला एक व्यक्ति बच्चों को सिक्कों के जरिये इतिहास बताता है।

जैन धर्म और गोमतेश्वर (जैनिज़्म एण्ड गोमतेश्वर) (29:00 मिनट)

यह फिल्म एक कथावाचक (भवानी) द्वारा बाहुबली की कहानी के वर्णन से शुरू होती है। बच्चे श्रवणबेलगोला में बाहुबली की विशालकाय पत्थर की मूर्ति देखने जाते हैं और करकला के एक मूर्तिकार से मूर्तियों को गढ़ने की बारीकियाँ और तरीके के बारे में सीखते हैं। वे मूडाबिद्री के बसादी में हजारों खम्भों को देखते हैं और एक गमका गायक द्वारा पम्पा के आदिपूर्ण के गायन से जैन धर्म की झलकियाँ पाते हैं। यह चर्चा, कि किस तरह साहित्य हमें इतिहास को निर्मित करने के लिए कुछ संकेत देता है, बहुत गहरी समझ प्रदान करती है।

जातक कथाएँ और बौद्ध धर्म (जातक टेल्स एण्ड बुद्धिज़्म) (29:40 मिनट)

इस इकाई की शुरुआत गौतम बुद्ध के जीवन की कहानी से होती है। जातक कथाओं की दो रोचक कहानियों (हंस, तथा गौतम और देवदत्त) का बहुत सुन्दर चित्रों के माध्यम से बच्चों से वर्णन किया जाता है। ह्वेनसांग के यात्रा वृतान्त का उपयोग करते हुए नालन्दा में प्राचीन समय में स्थित विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी दी जाती है। इसे बहुत सुन्दर चित्रों से सजीव बना दिया गया है। अन्त में बच्चे अपनी यात्रा का विवरण लिखते हैं और एक अच्छे यात्रावृतान्त के उपयोग और उसके आवश्यक अंगों के बारे में बातचीत करते हैं।

वचनों से प्रगट होने वाला इतिहास (हिस्ट्री वचन्स रिवील) (27:59 मिनट)

इस अन्तिम फिल्म में 12वीं शताब्दी के भक्ति आन्दोलन के वचनकारों द्वारा रचित वचनों से इतिहास को समझने का प्रयास किया गया है। एक स्थानीय मण्डली बासवन्ना के चुने हुए वचनों को गाती है और बच्चे उनसे प्रश्न पूछकर इन वचनों की पृष्ठभूमि और सन्दर्भ को समझने का प्रयास करते हैं, ताकि वे उस परिस्थिति की कल्पना कर सकें जिसके फलस्वरूप साधारण लोग एक ऐसे

आन्दोलन में कूद पड़े जिसने सभी तरह के भेदभाव के खिलाफ लड़ाई लड़ी और एक ऐसे समाज को बनाने का प्रयास किया जो **न्यायपूर्ण, मानवीय** और **समतावादी** था।

> *विषयों का चयन बहुत सावधानी और सोच के साथ किया गया है। ऐतिहासिक महत्व के स्थानों पर जाने और विशेषज्ञों तथा क्षेत्र में सक्रिय लोगों के साथ बातचीत करने से फिल्में बहुत समृद्ध और लाभप्रद बन गई हैं।*

पूरी फिल्म शृंखला की विषयवस्तु बहुत उम्दा ढंग से तैयार की गई है। इतिहास की कक्षा में क्या पढ़ाया जाना चाहिए, इसका सार बहुत प्रभावी ढंग से सामने आता है। विषयों का चयन बहुत सावधानी और सोच के साथ किया गया है। ऐतिहासिक महत्व के स्थानों पर जाने और विशेषज्ञों तथा क्षेत्र में सक्रिय लोगों के साथ बातचीत करने से फिल्में बहुत समृद्ध और लाभप्रद बन गई हैं। निर्माण–दल ने बहुत कुशलता के साथ इस माध्यम का प्रयोग किया है। फ्रेमों, रंगों और प्रकाश, इन सबके निपुण संयोजन से कुछ दृश्य तो अच्छी पेंटिंग जैसे बन गए हैं। भ्रमण करने के लिए उन्होंने जिन स्थानों को चुना है वे बहुत समृद्ध हैं और उनमें विविधता है और इसीलिए पूरी शृंखला देखने में ऊब और थकान नहीं होती।

दीपा ने विभिन्न तरीकों और माध्यमों का बहुत प्रभावी ढंग से प्रयोग किया है, जैसे वास्तविक स्थानों का भ्रमण करना, शिक्षकों, बुजुर्गों और परिवार के सदस्यों से मिलना, शिक्षकों का खास विषयों को प्रस्तुत करना, उस क्षेत्र में काम कर रहे लोगों से चर्चा करना, विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं से जानकारी लेना आदि। उन्होंने अपने सन्देश को प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए कुछ माध्यमों, जैसे वर्णन, कहानी कहने, लोक गीत, रंगीन चित्र, एनीमेशन आदि का कल्पनाशील तरीके से प्रयोग किया है। छात्रों और शिक्षकों द्वारा पूछे गए गहरे प्रश्न हमें रुक कर सोचने पर मजबूर करते हैं। फिल्म में कई हल्के–फुल्के क्षण भी हैं, जैसे जब बच्चे बन्दरों को खेलते हुए देखते हैं। कई जगहों पर मौन के अन्तराल भी हैं, जो राहत देते हैं और हमें तब तक चर्चित मुद्दों के बारे में सोचने और पुनरीक्षण करने में मदद करते हैं। एक विषय से दूसरे विषय पर जाना काफी सहज और तर्कसंगत है।

यह फिल्म शृंखला बहुत असरदार ढंग से यह सन्देश देती है कि यह कतई जरूरी नहीं कि इतिहास का पढ़ाना बहुत बोझिल और उबाऊ हो, या फिर उन तारीखों को याद रखने तक सीमित हो, जब राजाओं ने आपस में लड़ाइयाँ की थीं। बच्चे सर्वोत्तम पाने के हकदार होते हैं और उन्हें श्रेष्ठ प्रस्तुति प्रदान करने के लिए दीपा बहुत धन्यवाद की पात्र हैं।

निर्माता और निर्देशक– दीपा धनराज

चित्रांकन – नवरोज़ कॉन्ट्रैक्टर

पटकथा – कोटागनहल्ली रमैय्या

मार्गदर्शक अध्यापक – चेग्गा रेड्डी

प्रस्तुतकर्ता – ईडीसी और डीएसईआरटी

2005 में निर्मित और 2007 में प्रस्तुत

ये फिल्म कन्नड़ में है और इसमें अंग्रेजी के सबटाईटल्स हैं।

उमाशंकर पेरिओडी *अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में चाईल्ड–फ्रैंडली स्कूल इनीशिएटिव के प्रमुख हैं। उन्हें विकास क्षेत्र में करीब 25 वर्षों का अनुभव है। उन्होंने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में व्यापक योगदान देने के साथ–साथ कर्नाटक के बीआर हिल्स में आदिवासियों के शिक्षण में भी भूमिका निभाई है। वे कर्नाटक स्टेट ट्रेनर कलेक्टिव के अध्यक्ष भी हैं। उनसे इस periodi@azimpremjifoundation.org ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*